License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

मत्ती 1:1–17

यीशु के समय में, यहूदियों के लिए वंशावली बहुत महत्वपूर्ण थीं। यीशु की वंशावली दिखाती है कि वह अब्राहम के परिवार से थे। वह राजा दाऊद के शाही परिवार से भी थे। यहूदी जानते थे कि मसीहा इन दो वंशावलियों से आएंगे। पुराने नियम में यीशु के परिवार के कई लोगों के बारे में कहानियाँ हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ कठिन और दर्दनाक हैं। इनमें से कुछ महिलाएँ और पुरुष इस्राएल से नहीं थे। उन्हें बाहरी माना जाता था। मत्ती के सुसमाचार में दर्ज वंशावली ने यीशु के बारे में कुछ दिखाया। परमेश्वर के अब्राहम के साथ किए गए वाचा की प्रतिज्ञाएँ यीशु के जीवन और कार्य के माध्यम से पूरे होते हैं। यह परमेश्वर के दाऊद के साथ किए गए वाचा की प्रतिज्ञाएँ के बारे में भी सच है। इस वंशावली ने दिखाया कि यीशु सभी लोगों के लिए मसीहा है। वह यहूदियों और गैर-यहूदियों, उन दोनों के लिए मसीहा है।

मत्ती 1:18–25

यीशु के जन्म की कहानी में, मत्ती ने यीशु के बारे में कई बातें दर्ज कीं। यीशु मसीहा हैं और वह परमेश्वर की ओर से आते हैं। पवित्र आत्मा ने मरियम के गर्भवती होने को संभव बनाया। एक आत्मिक प्राणी जिसे स्वर्गदूत कहते हैं, उसने यूसुफ को बच्चे के बारे में बताया। यह बच्चा परमेश्वर के लोगों का उद्धारकर्ता होगा। भविष्यवक्ता यशायाह के शब्द यीशु के जीवन में पूरे हो गए (मत्ती 1:23)। यशायाह की यीशु के बारे में भविष्यवाणी ने दिखाया कि यीशु के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों के साथ हैं। यीशु वह स्वतंत्रता और चंगाई लाएंगे जो परमेश्वर उन्हें देना चाहते थे।

मत्ती 2:1–23

यीशु का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उनका जन्म बैतलहम नामक एक छोटे से नगर में हुआ था। उनका जन्म कोई महत्वपूर्ण समाचार नहीं था जिसे हर कोई जानता था। लेकिन मत्ती ने कुछ चिन्हों के बारे में लिखा जो दिखाते हैं कि यीशु का जन्म कितना महत्वपूर्ण था। ज्योतिषियों ने घोषणा की कि यीशु एक राजा थे। इससे हेरोदेस महान को चिंता हुई। सम्राट कैसर ने हेरोदेस को यहूदिया का राजा बनाया था। एक नए राजा के आने से उसकी सत्ता को चुनौती मिल सकती थी। हेरोदेस एक क्रूर और निर्दयी शासक था जिसने भयानक काम किए थे। उसने यीशु को मारने के प्रयास में कई शिशुओं की हत्या करवाई। परन्तु परमेश्वर ने शिशु यीशु को हेरोदेस से बचाया। यीशु के माता-पिता मिस्र भाग गए। बाद में वे गलील में सुरक्षित रूप से रहने लगे।

मत्ती 3:1–12

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला वह संदेशवाहक था जो मसीहा से पहले आया था। कई मायनों में वह पुराने समय के भविष्यवक्ताओं की तरह था। उसने वैसा ही वस्त्र पहना था जैसा भविष्यवक्ता एलिय्याह ने पहना था (2 राजा 1:8)। उसका संदेश भी एलिय्याह के संदेश जैसा था। उसने लोगों को बताया कि प्रभु के आने के लिए कैसे तैयारी करें। एलिय्याह की तरह, यूहन्ना भी जंगल में और फिर यरदन नदी तक गया। एक के बाद एक व्यक्ति ने पाप से मुंह मोड़ा और यूहन्ना के प्रचार के कारण बपतिस्मा लिया। फिर भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का काम केवल व्यक्तियों के बारे में नहीं था। वह समुदाय को परमेश्वर के आगमन के लिए तैयार कर रहा था। वह उम्मीद करता था कि मसीहा आयेंगे और न्याय एवं उद्धार लायेंगे।

मत्ती 3:13–17

यीशु ने पाप नहीं किया था, इसलिए यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने उन्हें बपतिस्मा देने की उम्मीद नहीं की थी। यीशु का बपतिस्मा इस लिए हुआ ताकि यह दर्शाया जा सके कि वह इस्राएल के लोगों में से एक था। यह ये भी दर्शाता है कि वह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के संदेश से सहमत थे। यीशु के बपतिस्मा में, परमेश्वर ने खुद को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट किया। ये त्रियेक परमेश्वर के तीन व्यक्ति हैं। परमेश्वर का आत्मा एक कबूतर के रूप में उतरा। यह उस शांति का प्रतिक था जो मसीहा दे रहे थे। फिर पिता ने यीशु के बारे में सत्य की घोषणा की। यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं और परमेश्वर उनसे प्रेम करते हैं। इन चिन्हों ने यीशु को परमेश्वर और दूसरों के लिए किए जाने वाले कार्य के लिए तैयार होने में सहायता की।

मत्ती 4:1–11

यीशु एकांत में गए। इससे उन्हें लोगों के बीच अपना काम शुरू करने की तैयारी करने में मदद मिली। तुरन्त ही शैतान उन्हें परीक्षा में डालने आया। शैतान संसार में बुरे काम करने की अपनी शक्ति को बनाए रखना चाहता था। लेकिन उसकी शक्ति खतरे में थी क्योंकि यीशु पृथ्वी पर आ गए थे। यीशु पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति को रोकने के लिए आए थे। शैतान ने यीशु को परमेश्वर के अलावा किसी और से सहायता और सामर्थ्य पाने के लिए उनकी परीक्षा ली। वह चाहता था कि यीशु पत्थरों को रोटी में बदल दें। अगर यीशु ऐसा करते, तो वह अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा कर रहे होते। वह परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर रहे होते कि वह उनकी देखभाल करेंगे। शैतान ने यीशु को मंदिर से नीचे कूदने को

कहकर उनकी परीक्षा ली। शैतान ने कहा कि इससे सभी को पता चलेगा कि यीशु कितने शक्तिशाली हैं। अगर यीशु ऐसा करते, तो वह घमंड से कार्य कर रहे होते। वह अपने लिए महिमा की तलाश कर रहे होते। वह परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर रहे होते कि वह उन्हें सम्मानित करेंगे। फिर शैतान ने यीशु को दुनिया की सारी दौलत देने की पेशकश की। लेकिन अगर यीशु शैतान की आराधना करते, तो वह केवल परमेश्वर की आराधना और सेवा नहीं कर सकते थे। हर बार जब शैतान ने उनकी परीक्षा ली, तो यीशु ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से वचन का उपयोग करके उत्तर दिया। व्यवस्थाविवरण में मूसा ने परमेश्वर के लोगों से सीनै पर्वत की वाचा के प्रति वफादार रहने का आग्रह किया था। इस्राएलियों ने मूसा की बात नहीं मानी और परमेश्वर की वाचा के प्रति वफादार नहीं रहे। उन से विपरीत, यीशु परमेश्वर के प्रति वफादार रहे। शैतान यीशु को छोड़कर चला गया। लेकिन उसने यीशु के काम को बार-बार रोकने की कोशिश जारी रखी।

मत्ती 4:12–17

परमेश्वर ने वादा किया था कि वह अपने लोगों के लिए एक नया शासक भेजेंगे। सैकड़ों साल पहले के भविष्यवक्ताओं ने यह संदेश की घोषणा की थी। नया शासक दाऊद के वंशावली से आएगा (यशायाह 9:7)। मत्ती ने दिखाया कि यीशु वही शासक थे। यीशु गलील से थे। गलील वह स्थान था जिसके बारे में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी। और यीशु परमेश्वर की ज्योति को लाए। भविष्यवक्ता यशायाह ने अंधकार में रहने वाले लोगों के बारे में बात की थी। यह लोगों पर पाप के प्रभाव को व्यक्त करने का एक तरीका था। यह उन्हें नियंत्रित करता है ताकि वे परमेश्वर को पहचान न सकें या उनकी भलाई का आनंद न ले सकें। लेकिन मत्ती ने दिखाया कि लोगों पर एक महान ज्योति चमक रही थी। यीशु वह ज्योति थे जो लोगों को दिखा रहे थे कि परमेश्वर कैसे हैं। उन्होंने उन्हें दिखाया कि परमेश्वर के लिए जीना क्या होता है। उन्होंने पाप से दूर होकर शुरुआत की। यीशु के माध्यम से, परमेश्वर अपना शासन पृथ्वी पर ला रहे थे। स्वर्ग के राज्य के निकट होने के विषय में यीशु का यही तात्पर्य था। स्वर्ग का राज्य परमेश्वर का राज्य है।

मत्ती 4:18–25

यीशु को परमेश्वर के राज्य के लिए कार्य करने थे। उन्होंने इस कार्य की शुरुआत कुछ लोगों से अपने शिष्य बनने के लिए कहकर की। शिष्य यीशु के साथ उनके कार्य में शामिल होते और उनसे सीखते। पतरस, आन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना ने देखा कि यीशु के पास अधिकार था। उन्होंने तुरन्त अपने मछुआरें के काम को छोड़ दिया और यीशु का अनुसरण किया। यीशु का कार्य शिक्षा और चंगाई देना था। उन्होंने सिखाया कि परमेश्वर इस संसार के सच्चे राजा हैं। यीशु के माध्यम से, परमेश्वर लोगों को बचाने के लिए आए थे। वह उन्हें पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति से बचाने के लिए आए थे। यह सुसमाचार था! यीशु ने अपनी सामर्थ्य से कई लोगों को स्वस्थ और शक्तिशाली बनाया। उन्होंने जो चमत्कार किए, उनसे उन्होंने दर्शाया कि परमेश्वर रोग और दर्द से अधिक शक्तिशाली हैं। उन्होंने दर्शाया कि परमेश्वर दुष्ट आत्मिक प्राणियों जैसे दुष्टात्माओं से अधिक शक्तिशाली हैं। लोगों ने इन महान कार्यों के बारे में सुना और वे उत्साहित हो गए। यीशु के चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई।

मत्ती 5:1–12

यह यीशु के लम्बे संदेशों में से पहला संदेश था। संदेश की शुरुआत यीशु ने अपने शिष्यों को पहाड़ पर इकट्ठा करके की। उन्होंने यह सिखाया कि स्वर्ग के राज्य का हिस्सा बनने के लिए उन्हें कैसे जीना होगा। उन्होंने यह बताकर शुरुआत की कि किस प्रकार के लोग स्वर्ग के राज्य का हिस्सा होंगे। यह राज्य मानव राज्यों या सरकारों के काम करने के तरीके से बहुत अलग है। यह उन लोगों के लिए नहीं है जो अहंकारी हैं और सोचते हैं कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। यह उन लोगों के लिए नहीं है जो अपनी ताकत का उपयोग दूसरों को पीड़ा देने के लिए करते हैं। यह उन लोगों के लिए नहीं है जो केवल अपनी खुशी के लिए प्रतिबद्ध हैं। यीशु जानते हैं कि कई लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया गया है और वे पीड़ित हैं। कई लोग दुखी हैं। कई लोग जानते हैं कि उन्हें परमेश्वर की सहायता की जरूरत है। कई लोग पृथ्वी पर न्याय और शांति की लालसा कर रहे हैं। कई लोग समझते हैं कि परमेश्वर किस चीज की गहराई से परवाह करते हैं। वे वही करते हैं जो परमेश्वर चाहते हैं, भले ही वह कठिन हो। यीशु ने कहा कि ये सभी लोग धन्य हैं। वे परमेश्वर के संतान हैं। वह उन्हें सांत्वना देंगे और उन पर दया दिखाएंगे। वे स्वर्ग के राज्य का हिस्सा हैं।

मत्ती 5:13–20

यीशु ने कहा कि परमेश्वर के लोगों को संसार में नमक और ज्योति बनना है। वह उनके जीने के तरीके के बारे में बात कर रहे थे। नमक भोजन को सड़ने से रोकता है और ज्योति अंधकार को दूर करता है। परमेश्वर नहीं चाहते कि उनकी दुनिया सड़ जाए। वह नहीं चाहते कि यह पाप के कारण अंधकार में रहे। परमेश्वर के लोगों को ऐसे तरीके से जीना चाहिए जिससे उनकी दुनिया स्वस्थ और सुरक्षित रहे। इस तरह वे अन्य लोगों के समूहों और राष्ट्रों को परमेश्वर को जानने और उनकी सेवा करने में मदद करते हैं। यीशु ने परमेश्वर के वचन से प्रेम किया। उन्होंने लोगों को परमेश्वर के निर्देशों का सम्मान करने और उनका पालन करना सिखाया। इसमें मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाएँ शामिल थीं। पुराने नियम का इतिहास, व्यवस्था और भविष्यवाणी की पुस्तकें, परमेश्वर के पूर्ण रूप से राजा के रूप में शासन करने

के बारे में बात करती थीं। यह यीशु के माध्यम से शुरू हुआ। इस प्रकार पुराने नियम के वचन यीशु के माध्यम से पूरे हुए।

मत्ती 5:21–48

यीशु ने मूसा की व्यवस्था में दर्ज कई नियमों के बारे में सिखाया। उन्होंने दर्शाया कि उनमें सबसे महत्वपूर्ण क्या था। परमेश्वर ऐसे लोगों की तलाश में हैं जो समझते हैं कि वह वास्तव में क्या चाहते हैं। यीशु ने परमेश्वर की इच्छाओं के कई उदाहरण दिए। हर उदाहरण इस बारे में था कि लोगों को दूसरों के साथ कैसे रहना चाहिए और एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। यीशु ने सिखाया कि लोगों को केवल अपने दोस्तों और पड़ोसियों से नहीं अपने दुश्मनों से भी प्यार करना चाहिए। लोगों को दूसरों के साथ इस आधार पर व्यवहार नहीं करना चाहिए कि उनके साथ कैसा व्यवहार किया गया है। इसके बजाय, यीशु ने लोगों को दूसरों के साथ अच्छा करने के तरीके खोजने के लिए सिखाया। जो लोग ऐसा करते हैं वे स्वर्ग के राज्य के संतान हैं। परमेश्वर उनके पिता हैं और वे उनके उदाहरण का पालन करते हैं। वे दूसरों की देखभाल करते हैं और उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

मत्ती 6:1–15

यीशु ने समझाया कि पवित्र होने का क्या अर्थ है और पवित्र जीवन का क्या अर्थ है। उन्होंने सिखाया कि लोगों के विचारों और कार्यों के केंद्र में परमेश्वर होने चाहिए। परमेश्वर देखते हैं जब उनके संतान अच्छे काम करते हैं। वे अच्छे कार्य इसलिए नहीं करते कि उन्हें दूसरों के द्वारा सम्मानित किया जाए। वे अच्छे कार्य इसलिए करते हैं क्योंकि वे अपने स्वर्गीय पिता द्वारा प्रदान की गई अद्भुत चीज़ों को दूसरों के साथ बाँटना चाहते हैं। यीशु ने एक उदाहरण दिया कि लोगों के विचारों और कार्यों के केंद्र में परमेश्वर कैसे होते हैं। उन्होंने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया। इससे पहले उन्होंने स्वर्ग के राज्य में धन्य लोगों के बारे में बात की थी। यह प्रार्थना उन धन्य लोगों की प्रार्थना का एक उदाहरण थी। यीशु की प्रार्थना ने यह माना कि जो लोग परमेश्वर का अनुसरण करते हैं वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं। परमेश्वर के संतान उन्हें पिता पुकारते हैं। वे विनम्र होते हैं और खुद के बजाय परमेश्वर को सम्मान देने की कोशिश करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ही राजा हैं। वे उस समय की प्रतीक्षा करते हैं जब वह बुराई को नष्ट करेंगे और पूरी तरह से पृथ्वी पर शासन करेंगे। वे भोजन और अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए उन पर निर्भर रहते हैं। वे उन पर दया करने और उन्हें क्षमा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। वे यह दया दूसरों को भी दिखाते हैं। वे दूसरों के साथ शांति बनाते हैं और दूसरों को क्षमा करते हैं। पहले, जब शैतान ने यीशु की परीक्षा की थी, तब यीशु परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहे। परमेश्वर अपने संतानों को उनके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने में मदद करेंगे। जब वे परीक्षा में पड़ेंगे तो वह उन्हें पाप न करने में मदद करेंगे।परमेश्वर के संतान विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन्हें शैतान और सभी बुराई करने वालों से बचाएंगे।

मत्ती 6:16–34

यीशु ने सिखाना जारी रखा कि लोगों के विचारों और कार्यों के केंद्र में परमेश्वर होने चाहिए। लोग चीजों की सही तरीके से परवाह तभी करते हैं जब वे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और परमेश्वर से प्रेम करते हैं। अगर धन और अन्य खजाने केंद्र में हैं, तो लोग झूठे देवताओं की सेवा करते हैं। यह उन्हें उस सच्चे परमेश्वर से दूर कर देता है जिसने उनकी सृष्टि की। परमेश्वर के संतानों को चिंता नियंत्रित नहीं करना चाहिए। उनके स्वर्गीय पिता उन्हें जानते हैं और उनसे प्रेम करते हैं। सृष्टिकर्ता सभी जीवित प्राणियों का ख्याल रखते हैं और इसमें मनुष्य भी शामिल हैं। इसलिए परमेश्वर के संतानों को उन पर भरोसा करना चाहिए। उन्हें वही कार्य करना चाहिए जो उनके पिता अपने राज्य में करवाना चाहते हैं।

मत्ती 7:1–12

यीशु चाहते थे कि उनके लोग पवित्र जीवन जियें, जो प्रेम से भरे हों। उन्होंने कुछ शब्दों में वही कहा जो सम्पूर्ण पुराना नियम सिखाता है। लोगों को दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वे चाहते हैं कि उनके साथ किया जाए। जब वे ऐसा करते हैं, तो वे पृथ्वी पर आने वाले परमेश्वर के राज्य का हिस्सा बन जाते हैं। वे उन लोगों के समुदाय का हिस्सा होते हैं जो मानते हैं कि यीशु राजा हैं। लेकिन कुछ लोग सोचते हैं कि जीवन के लिए परमेश्वर के निर्देश उन्हें दूसरों का न्याय करने का अधिकार देते हैं। वे मानते हैं कि वे यह तय कर सकते हैं कि परमेश्वर को किसके खिलाफ न्याय लाना चाहिए। यह वह नहीं है जो परमेश्वर चाहते हैं। केवल परमेश्वर ही न्याय के बारे में निर्णय लेते हैं। उनके संतानों को विनम्र, बुद्धिमान और दया से भरा होना चाहिए। इस तरह से वे दूसरों की मदद कर सकते हैं। परमेश्वर के पास देने के लिए उत्तम उपहार हैं और वह चाहता है कि सभी लोग उनसे मांगें। वह चाहता है कि सभी लोग उसके राज्य की खोज करें और उसके परिवार का हिस्सा बनें।

मत्ती 7:13–23

यीशु ने पहाड़ पर शिक्षा देना जारी रखा। उन्होंने उस महत्वपूर्ण चुनाव के बारे में बात की जिसका सामना सभी लोगों को करना पड़ता है। हर व्यक्ति को दो जीवन जीने के तरीकों में से एक को चुनना होता है। वे परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन के मार्ग को चुन सकते हैं। जो लोग परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन चाहते हैं, वे वही करते हैं जो उनके पिता चाहते हैं। वे स्वर्ग के राज्य का हिस्सा हैं। वे स्वस्थ पेड़ों की तरह हैं जो अच्छा फल देते हैं। जीने का दूसरा मार्ग परमेश्वर के जीवन को अस्वीकार करना। वह मार्ग लोगों को नष्ट कर देता है। कुछ लोग परमेश्वर के मार्ग का पालन करने का

दिखावा करते हैं। वे ऐसी बातें कहते या करते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे परमेश्वर के संतान हैं। लेकिन वे बुरे फल देने वाले पेड़ों की तरह हैं। क्योंकि वे बुराई कर रहे हैं, वे स्वर्ग के राज्य का हिस्सा नहीं हैं।

मत्ती 7:24–29

यीशु पहाड़ पर अपना लंबा संदेश समाप्त कर रहे थे। उन्होंने एक कहानी सुनाई ताकि यह दर्शाया जा सके कि उनकी शिक्षाएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं। जो लोग यीशु के वचनों को सुनते हैं और उनका पालन करते हैं, वे बुद्धिमान निर्माणकर्ताओं की तरह हैं। जो लोग यीशु की बात नहीं सुनते या उनका पालन नहीं करते, वे मूर्ख निर्माणकर्ताओं के समान हैं। यीशु अन्य रब्बियों की तरह नहीं थे जो केवल मूसा से सीखी हुई बातें सिखाते थे। वह बड़ी शक्ति और अधिकार के साथ परमेश्वर से नई शिक्षा लेकर आया।

मत्ती 8:1–17

यीशु ने उत्तरी इस्राएल में गलील की यात्रा की। वह लोगों को चंगा करने के लिए जाने जाते थे। कई बीमार लोग उनके पास आए। यीशु ने पहाड़ की चोटी पर शिक्षा देते समय बड़ा अधिकार दिखाया था। उन्होंने लोगों को चंगा करते समय भी बड़ा अधिकार दिखाया। यीशु ने एक चर्म रोग वाले व्यक्ति को चंगा किया। उन्होंने एक रोमी सूबेदार के सेवक को चंगा किया। उन्होंने पतरस की सास और उन लोगों को भी चंगा किया जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त थे। मत्ती दिखा रहे थे कि यीशु बीमारी और दुष्टात्माओं से अधिक शक्तिशाली हैं। लेकिन परमेश्वर का राज्य केवल इसलिए आता है क्योंकि यीशु लोगों के लिए कष्ट सहने को तैयार थे। मत्ती ने यीशु के बारे में यशायाह की पुस्तक में की गई एक भविष्यवाणी के शब्दों का उपयोग किया। मत्ती ने दर्शाया कि यीशु परमेश्वर के सेवक हैं जो कष्ट सहते हैं।

मत्ती 8:18–34

जब लोगों ने देखा कि यीशु के पास अधिकार है, तो कुछ ने उनका अनुसरण करने का निर्णय लिया। अन्य लोगों ने उनका अनुसरण न करने के लिए बहाने बनाए। यीशु ने समझाया कि उनका अनुसरण करने का निर्णय लेना सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है जो कोई व्यक्ति ले सकता है। यह सबसे कठिन विकल्प भी हो सकता है। फिर यीशु अपने शिष्यों के साथ एक नाव में सवार हुए। जब तूफान आया तो शिष्य डर गए। यीशु ने आँधी और लहरों को शांत किया। शिष्य आश्चर्यचकित थे कि यीशु के पास आँधी पर भी अधिकार था। यीशु की शक्ति ने झील में शांति ला दी। झील के दूसरी तरफ़, यीशु ने दो लोगों को शांति दी। उसने उन दुष्टात्माओं को बाहर निकाला जो उन्हें नियंत्रित कर रहे थे। उस शहर के लोगों ने दुष्टात्माओं पर यीशु के अधिकार को देखा। वे नहीं चाहते थे कि यीशु उनके क्षेत्र में रहे।

मत्ती 9:1–17

एक व्यक्ति जो चल नहीं सकता था, उसके दोस्तों को विश्वास था कि यीशु परमेश्वर से आए हैं। वे अपने मित्र को यीशु के पास लाए। यीशु का कार्य परमेश्वर के राज्य को संसार में लाना था। परमेश्वर के राज्य में, पाप लोगों को नियंत्रित नहीं करता। इसलिए यीशु ने उस आदमी के पापों को माफ कर दिया। शास्त्री इस बात से नाराज थे कि यीशु परमेश्वर की तरह व्यवहार कर रहे थे। यीशु के पास लोगों को उनकी आत्मा और उनके शरीर को चंगा करने की शक्ति है। इसे साबित करने के लिए, यीशु ने उस मनुष्य के शरीर को भी चंगा किया। फिर यीशु ने मत्ती नामक चुंगी लेनेवाले से मुलाकात की। फरीसी खुश नहीं थे कि यीशु चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाते थे। यीशु ने समझाया कि वह उन लोगों को चंगा करने और बचाने के लिए आए थे जो जानते हैं कि वे पापी हैं। यीशु लोगों को परमेश्वर के करीब आने का एक नया तरीका लेकर आए। नया वस्त्र और नई मशकें यह दर्शाने के तरीके थे कि यीशु का मार्ग नया था।

मत्ती 9:18–38

यीशु ने सभी लोगों को परमेश्वर के राज्य के जीवन में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित किया। इसमें बच्चे, आराधनालय के सरदार और वे लोग शामिल थे जो दुष्टात्माओं द्वारा नियंत्रित थे। इसमें अंधे पुरुषों के साथ-साथ पीड़ित महिलाएं भी शामिल थीं। कुछ लोगों ने यीशु के शक्तिशाली कार्यों को देखा और विश्वास किया। उन्होंने विश्वास किया कि वह दाऊद का पुत्र है। उन्हें विश्वास था कि उसके पास बीमारी, मृत्यु और बुराई पर परमेश्वर से मिली हुई सामर्थ्य है। लेकिन हर कोई यह नहीं मानता था कि यीशु की शक्ति परमेश्वर से है। कुछ इस्राएल के प्रधानों ने सोचा कि यीशु की शक्ति दुष्टात्माओं के सरदार से आई है। ये प्रधान परमेश्वर के लोगों की देखभाल नहीं करते थे। यीशु अलग थे। उन्होंने लोगों की ज़रूरतों को देखा और उनकी देखभाल करने के लिए कड़ी मेहनत की।

मत्ती 10:1–15

यीशु ने अपने 12 शिष्यों को अपना सबसे भरोसेमंद अनुयायी के रूप में चुना। उन्हें प्रेरित कहा जाता था। यीशु के निर्देश उनके लिए मत्ती के सुसमाचार में दूसरा लंबा संदेश था। यीशु ने 12 चेलों को पूरे इस्राएल में अपने कार्य में साझेदार बनाकर भेजा। यीशु की तरह, शिष्यों को उन लोगों की देखभाल करनी थी जो पीड़ित थे। उन्हें यह प्रचार करना था कि यीशु कैसे परमेश्वर का राज्य ला रहे थे। उन्हें यीशु की तरह चमत्कार करके यह दर्शाना था कि यह सच है। इनमें लोगों के शरीर को चंगा करना और दुष्टात्माओं को निकालना शामिल था। 12 शिष्यों को अपने साथ पैसे या अतिरिक्त वस्त्र या सामान नहीं ले जाना था। परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के कार्यकर्ताओं की ज़रूरतें पूरी करनी चाहिए।

मत्ती 10:16–42

यीशु ने समझाया कि उनका अनुसरण करना बहुत कठिन हो सकता है। उनके शिष्यों को किसी और से बढ़ कर उनसे अधिक प्रेम करना चाहिए। उन्हें उनसे अपने परिवारों से भी बढ़ कर अधिक प्रेम करना चाहिए। इसका अर्थ यह था कि यीशु के साथ उनका सम्बन्ध किसी भी दूसरे सम्बन्ध से ज़्यादा महत्वपूर्ण था। कई लोग यीशु का विरोध करते थे। यदि शिष्य उनके प्रति विश्वासयोग्य रहते, तो उनका भी विरोध किया जाता और बुरा व्यवहार किया जाता। यीशु में उनके विश्वास के कारण उनके परिवार के कुछ सदस्य उनके खिलाफ़ हो जाएँगे। लोग शिष्यों के शरीरों को भी नुकसान पहुंचा सकते थे। लेकिन असली खतरा तब था जब वे यीशु का अनुसरण करना छोड़ देते। तब वे परमेश्वर के राज्य में उनके साथ जीवन खो देते। यह उनके परिवारों या उनकी सुरक्षा खोने से भी अधिक बुरा होता। यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर उनकी कितनी गहराई से चिंता करते हैं और उनकी आत्माओं की रक्षा कर रहे हैं। यीशु के साथ जीवन पाना सब कुछ छोड़ने के लायक है।

मत्ती 11:1–19

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास सवाल थे कि यीशु कौन थे। यीशु ने यशायाह 35:5–6 की एक भविष्यवाणी के शब्दों का उपयोग करके यूहन्ना के सवालों का जवाब दिया। यह यीशु के बारे में एक भविष्यवाणी थी। यीशु वही थे जिनके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को चंगा कर रहा था और उन्हें स्वतंत्र कर रहा था। यीशु ने इस्राएल को पाप से दूर होने और पश्चाताप करने के लिए बुलाया। अभी न्याय का समय नहीं था। यह चंगा करने और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने का समय था। फिर यीशु ने समझाया कि यूहन्ना एक संदेशवाहक थे। वह एलिय्याह जैसे संदेशवाहक थे जिन्हें परमेश्वर ने भेजने का वादा किया था (मलाकी 4:5–6)। लेकिन इस्राएल में हर किसी ने यीशु और यूहन्ना को स्वीकार नहीं किया।

मत्ती 11:20–30

परमेश्वर यीशु के द्वारा इस्राएल के लोगों के बीच कार्य कर रहे थे। फिर भी उन्होंने यीशु और उनके सुसमाचार को स्वीकार नहीं किया। यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि अगर वे लगातार परमेश्वर को न कहते रहेंगे तो क्या परिणाम होगा। उन्होंने बहुत पहले की उन शहरों के बारे में बात की जो बुरे कर्मों के लिए प्रसिद्ध थे। उन शहरों में रहने वाले लोगों ने कभी यीशु के शक्तिशाली चमत्कार नहीं देखे थे। यीशु ने कहा कि अगर उन्होंने देखे होते, तो वे अपने पापों से मुड़ जाते। फिर भी गलील के यहूदी शहर पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर नहीं जा रहे थे। यीशु चाहते थे कि लोग वास्तव में परमेश्वर को अपने पिता के रूप में जानें। उन्होंने देखा कि धार्मिक कर्तव्य भारी बोझ की तरह थे जिन्हें लोग इधर-उधर ले जाते थे।। यीशु का अनुसरण और सेवा करने से लोगों को विश्राम मिलता है। उन्होंने सभी लोगों को अपने विश्राम और शांति के मार्ग पर आमंत्रित किया।

मत्ती 12:1–14

यीशु के शिष्यों ने सब्त के दिन कुछ गेहूँ की बालें तोड़कर खा लीं। फरीसियों ने इस बारे में यीशु से शिकायत की। उन्होंने शिष्यों पर सब्त के दिन के नियमों को तोड़ने का आरोप लगाया। यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि जब दाऊद भूखा था, तब उसने उन नियमों को तोड़ा था। याजक भी हर सब्त के दिन मंदिर में काम करते समय उन नियमों को तोड़ते थे। यीशु यह दावा कर रहे थे कि उनके पास राजा दाऊद के समान अधिकार थे। और उनका कार्य मंदिर में याजकों के कार्य से अधिक महत्वपूर्ण था। फिर यीशु ने सब्त के दिन एक मनुष्य को चंगा किया। फरीसी नहीं चाहते थे कि वह ऐसा करें। परन्तु सिर्फ कुछ लोगों के विरोध के कारण यीशु परमेश्वर का कार्य करना नहीं छोड़ा। तब फरीसियों ने यीशु को मारने की योजना बनाना शुरू कर दिया।

मत्ती 12:15–21

कई साल पहले, परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में दर्ज एक वादा किया था। यह वादा एक भविष्यवाणी थी। मत्ती ने दर्शाया कि यीशु के कार्यों ने उस भविष्यवाणी को पूरा किया। यीशु वह सेवक थे जिसे परमेश्वर ने संसार में भेजा था। उन्होंने न्याय के लिए मुँह खोला और कदम उठाया। वह उन लोगों के प्रति कोमल थे जो दुखी थे। उन्होंने उन लोगों को प्रोत्साहित किया जिन्हें नुकसान हुआ था। वह सभी जातियों के लिए जो अच्छा, सही और सत्य है, लाएंगे।

मत्ती 12:22–37

यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को चंगा किया जो न देख और बोल सकता था। यीशु ने उससे दुष्टात्माओं को भी निकाला। फरीसियों ने दावा किया कि यीशु ने ऐसा करने के लिए शैतान की शक्ति का इस्तेमाल किया। जो लोग कहते थे कि शैतान ने यीशु को शक्ति दी, वे परमेश्वर के आत्मा के विरुद्ध बुरा बोल रहे थे। यीशु चाहते थे कि लोग समझें कि अच्छे और बुरे कार्य हृदय से आते हैं। उन्होंने अपने कहने का अर्थ समझाने के लिए एक पेड़ का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि अच्छे कार्य अच्छे फल की तरह होते हैं। एक अच्छा पेड़ अच्छे फल को उत्पन्न करता है। बुरे कर्म बुरे फल की तरह होते हैं। एक बुरा पेड़ बुरे फल को उत्पन्न करता है। लोगों का व्यवहार दर्शाता है कि उनके हृदय में क्या है। यीशु पाप से लोगों को बचाने और उन्हें परमेश्वर से प्रेम करने वाला हृदय देने के लिए आए थे।

मत्ती 12:38–50

यीशु ने पूरे इस्राएल में चंगाई के कई शक्तिशाली कार्य किए थे। कुछ धार्मिक प्रधानों ने यीशु से एक और चमत्कार दिखाने को कहा। लेकिन उन्होंने पहले ही तय कर लिया था कि वे यीशु पर विश्वास नहीं करते या उसका अनुसरण नहीं करना चाहते। यीशु का चमत्कार योना की कहानी में हुआ चमत्कार जैसा होगा। योना ने एक विशाल मछली के अंदर तीन दिन और तीन रातें बिताईं। फिर वह बाहर आया और परमेश्वर का संदेश सुनाया। कुछ ऐसा ही यीशु के साथ होगा। यीशु तीन दिनों तक मृत रहेंगे। फिर वह मृतकों में से जी उठेंगे और कब्र से बाहर आएंगे। परमेश्वर के राज्य के बारे में यीशु का संदेश योना के संदेश से कहीं ज़्यादा महान है। यह सुलैमान की बुद्धि से भी ज़्यादा महान है। यीशु ने समझाया कि जो लोग उसके संदेश पर विश्वास नहीं करते उनके साथ क्या होगा। उन्हें न्याय के दिन दोषी पाया जाएगा। फिर भी जो कोई उस पर विश्वास करता है और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है, वह उसके परिवार का हिस्सा है।

मत्ती 13:1–23

जब यीशु ने पहली बार इस्राएल के लोगों के बीच अपना कार्य शुरू किया, तो उन्होंने खुलकर बात की। उन्होंने स्वर्ग के राज्य की घोषणा की और लोगों को इसका हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन धार्मिक प्रधानों ने उनके शिक्षण को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। और इस्राएल में कई लोगों को संदेह था कि यीशु वास्तव में मसीहा थे। इस वजह से, यीशु ने इस्राएल में सिखाने का तरीका बदल दिया। उसने साफ-साफ बोलना बंद कर दिया और इसके बजाय दृष्टांत कहलाने वाली कहानियाँ सुनाकर सिखाया। यह यीशु के तीसरे लंबे संदेश की शुरुआत थी। यह परमेश्वर के राज्य के बारे में दृष्टांतों से भरा हुआ था। यीशु ने सबके सामने बीजों के बारे में कहानी सुनाई। लेकिन उन्होंने इसका अर्थ अपने शिष्यों को अकेले में ही समझाया। उन्होंने समझाया कि कई लोग राज्य के बारे में संदेश सुनते हैं। उनमें से कई इसे समझने से इनकार करते हैं। अन्य लोग यीशु का संदेश सुनते हैं और उसका पालन करते हैं। वे उन बीजों की तरह हैं जो अच्छी फसल पैदा करते हैं। वचन और कार्य जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं, वे अच्छी फसल हैं।

मत्ती 13:24–52

यीशु की कहानियों ने उनके कार्य और स्वर्ग के राज्य के आने के बारे में सिखाया। पृथ्वी पर यीशु के कार्य ने एक ही बार में हर जगह बुराई को नहीं रोका। अभी के लिए बुराई को परमेश्वर के राज्य के साथ रहने की अनुमति है। बाद में, न्याय आएगा और बुराई नष्ट हो जाएगी। परमेश्वर का राज्य छोटे तरीकों से शुरू होता है। यह बढ़ता है और पूरे विश्व में फैलता है। सभी राष्ट्र और सभी लोग इसका हिस्सा बन सकते हैं। परमेश्वर के राज्य को समझने का यह तरीका एक ख़ज़ाने की तरह है। कुछ लोग पहचान पाते हैं कि यीशु परमेश्वर से हैं। वे समझते हैं कि उनका कार्य परमेश्वर के राज्य को धरती पर लाता है। ये लोग इस खजाने के मूल्य को समझते हैं।

मत्ती 13:53–14:12

यीशु के नगर के लोग नहीं समझ पाए कि यीशु के पास इतनी बुद्धि कैसे थी। वे नहीं समझ पाए कि उसके पास चमत्कार करने की शक्ति कैसे थी। वे यीशु के बारे में क्रोधित थे और यह मानने से इनकार कर दिया कि वह परमेश्वर की ओर से आए थे। उसी समय, यहूदी और रोमी प्रधान यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रति क्रोधित थे। यूहन्ना ने सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासघात करने के लिए हेरोदेस अन्तिपास के खिलाफ़ बात की थी। हेरोदेस ने यूहन्ना को जेल में डाल दिया और बाद में यूहन्ना का सिर कटवा दिया। परमेश्वर का संदेश साझा करने के लिए यूहन्ना और यीशु दोनों का सम्मान या आदर नहीं किया गया।

मत्ती 14:13–21

जब यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु के बारे में सुना, तो वह अकेले रहना चाहते थे। लेकिन भीड़ ने उन्हें ढूंढ लिया और उन्हें घेर लिया। यीशु लोगों की बहुत परवाह करते थे। उन्होंने बीमारों को चंगा किया। फिर उन्होंने उन्हें भोजन कराया। उन्होंने यह चमत्कार चेलों के पास मौजूद थोड़े से भोजन का उपयोग करके किया। शिष्यों के पास केवल पांच रोटियां और दो मछलियां थीं। यीशु ने इसे 5,000 से अधिक लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त बना दिया। यह मत्ती द्वारा दर्ज लोगों को खिलाने के दो चमत्कारों में से पहला था। इससे परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ बात स्पष्ट हुआ। परमेश्वर का राज्य तब बढ़ता है जब परमेश्वर के लोग अपने पास जो कुछ भी है उसे स्वेच्छा से देने को तैयार होते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह भेंट कितनी छोटी है।

मत्ती 14:22–36

यीशु ने भीड़ और अपने शिष्यों को भेज दिया ताकि वह अकेले रह सकें। वह प्रार्थना करना चाहते थे। जब यीशु पानी पर चल कर आये तो शिष्यों ने प्रकृति पर उनके अधिकार को देखा। इससे वे डर गए। यीशु ने उन्हें सांत्वना देने वाले शब्द बोले। पतरस को सबसे पहले पानी पर यीशु का अनुसरण करने का विश्वास था। जब पतरस डर गए, तो यीशु ने उसे डूबने से बचाया। फिर यीशु ने लोगों को चंगा करते हुए प्रकृति और बीमारी पर अपना अधिकार दिखाना जारी रखा। उनकी शक्ति इतनी प्रबल थी कि उनके वस्त्रों को छूने से भी लोग चंगे हो जाते थे।

मत्ती 15:1–20

फरीसियों ने यीशु से पूछा कि उनके शिष्य ने प्राचीनों की शिक्षाओं का पालन क्यों नहीं किया। यीशु ने उनसे पूछा कि

उन्होंने अपनी माता और पिता का सम्मान करने की परमेश्वर की आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया। यीशु ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर के वचन का पालन करना महत्वपूर्ण है। यह मनुष्यों की शिक्षाओं और प्रथाओं का पालन करने से अधिक महत्वपूर्ण है। यीशु ने सिखाया कि शुद्ध रहने के नियमों का वास्तव में क्या मतलब है। किसी व्यक्ति को अशुद्ध बनाने वाली चीज़ वह नहीं है जो वह खाता है। बात यह नहीं थी कि उन्होंने अपने हाथ धोए या नहीं। अशुद्धता व्यक्ति के अंदर से आती है। बुरे शब्द और कार्य उसके हृदय से आते हैं।

मत्ती 15:21–28

यीशु यहूदी क्षेत्रों को छोड़कर अन्यजाती क्षेत्र में गए। एक महिला जो यहूदी नहीं थी, उसने यीशु से बात की। उसने उसे प्रभु और दाऊद की सन्तान कहा। इससे पता चलता है कि वह जानती थी कि यीशु वास्तव में कौन थे। उसने यीशु से अपनी बेटी को चंगा करने के लिए कहा। वह महिला लगातार यीशु से विनती करती रही और रुकी नहीं। यीशु ने उत्तर दिया कि उनका कार्य इस्राएल के लोगों के प्रति था। फिर भी उस महिला ने हार नहीं मानी। यीशु ने उसके दृढ़ विश्वास की प्रशंसा की और उसकी बेटी को चंगा कर दिया।

मत्ती 15:29–39

गलील में, यीशु फिर से एक पहाड़ी पर एक बड़ी भीड़ से घिरे हुए थे। भीड़ में कई लोग बीमारी या अपने शरीर की अन्य समस्याओं के कारण पीड़ित थे। यीशु को उन लोगों की बड़ी चिंता थी जिन्हें मदद की ज़रूरत थी। यीशु ने उनके शरीरों को चंगा किया। फिर उन्होंने 4,000 से अधिक लोगों की भीड़ को खिलाया। यह लोगों को खिलाने के बारे में दर्ज दो चमत्कारों में से दूसरा था जिसे मत्ती ने दर्ज किया। लोगों को चंगा करना और उन्हें भोजन कराना इस बात के चिन्ह थे कि परमेश्वर के राज्य में जीवन कैसा होता है। जब परमेश्वर पूरी तरह से राजा के रूप में शासन करेंगे, तो उनके लोग फिर से पीड़ित, जरूरतमंद या भूखे नहीं होंगे।

मत्ती 16:1–12

सदूकियों और फरीसियों में अक्सर असहमति होती थी लेकिन यीशु का विरोध करने के लिए वे एक साथ काम करते थे। उन्होंने यीशु से पूछा कि वह उन्हें कोई ऐसा चिन्ह दिखाए जिससे साबित हो कि परमेश्वर ने उन्हें भेजा है। लेकिन वास्तव में वे उसे फंसाना और नुकसान पहुँचाना चाहते थे। इसलिए यीशु ने अपने अनुयायियों को उनके बारे में चेतावनी दी। सदूकी और फरीसी इस्राएल के लोगों को ऐसी बातें सिखाते थे जो सच नहीं थीं। वे लोगों को परमेश्वर की आज्ञा मानने से दूर ले जा रहे थे।

मत्ती 16:13–27

यीशु ने अपने चेलों से पूछा कि वे क्या विश्वास करते हैं कि वह कौन हैं। परमेश्वर ने उन्हें दिखाया था कि यीशु एक भविष्यवक्ता से बढ़कर हैं। यीशु परमेश्वर के पुत्र और मसीहा हैं। वह इस्राएल के सच्चे राजा हैं। फिर यीशु ने शिष्यों को सिखाया कि इस्राएल का राजा दुःख उठाएगा और मार डाला जायेगा। पतरस क्रोधित हुआ और कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए। अधिकांश यहूदी मानते थे कि मसीहा एक योद्धा होगा जो उनके सभी शत्रुओं को नष्ट कर देगा। उस समय उनका सबसे बड़ा शत्रु रोमी सरकार था। लेकिन यीशु ने रोमियों को नष्ट करने का वादा नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने कहा कि उनका अनुसरण करना रोमी क्रूस उठाने और उस पर मरने जैसा है। वह इस बारे में बात कर रहा था कि परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए पूरी तरह समर्पित होना कितना कठिन है। उनके अनुयायियों को हर उस चीज़ से इनकार करना होगा जो परमेश्वर का सम्मान नहीं करती। यीशु के कुछ शिष्य उनके प्रति विश्वासयोग्य रहने के कारण मार डाले जाएंगे। लेकिन जो कोई भी यीशु पर विश्वास करता है और उनका अनुसरण करता है, उसे उनके पुनरुत्थान के माध्यम से नया जीवन मिलेगा।

मत्ती 16:28–17:13

यीशु अपने तीन सबसे भरोसेमंद शिष्यों को एक पहाड़ पर ले गए। पतरस, याकूब और यूहन्ना ने मनुष्य के पुत्र के रूप में यीशु की महिमा देखी। उनके चेहरे और वस्त्रों में हुए परिवर्तन ने उन्हें कुछ दिखाया। इसने उन्हें स्वर्गीय जगत में यीशु की शक्ति और अधिकार दिखाया। फिर मूसा और एलिय्याह दोनों प्रकट हुए। पहाड़ पर उनकी उपस्थिति एक चिन्ह थी। यह एक चिन्ह था कि इस्राएल के अतीत की हर चीज यीशु की ओर ले जाती है। यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उनका कार्य परमेश्वर के सभी उद्देश्यों को पूरा करता है। यीशु ने तीनों शिष्यों से कहा कि वे दूसरों को यह न बताएं कि उन्होंने पहाड़ पर क्या देखा। यीशु के मृतकों में से जीवित होने के बाद ही वे इसके बारे में बात कर सकते थे। तभी वे समझ पाएँगे कि उन्होंने क्या देखा था।

मत्ती 17:14–27

शिष्य संघर्ष कर रहे थे। वे एक ऐसे मसीहा की तलाश कर रहे थे जो रोमियों को नष्ट कर दे। शिष्यों ने दुष्ट आत्माओं पर यीशु की शक्ति को देखा था। इसलिए उन्हें विश्वास था कि वह इस्राएल राष्ट्र को फिर से मजबूत बना सकते हैं। उन्हें लगता था कि वह इसे बल और शक्ति से करेंगे। लेकिन जब उन्होंने इस विश्वास के आधार पर कार्य करने की कोशिश की, तो वे असफल हो गए। यीशु परेशान और चिंतित थे। वह नहीं चाहते थे कि उनके शिष्य बल या अपनी शक्ति का उपयोग करके परमेश्वर का कार्य करें। वह चाहते थे कि वे पूरी तरह से

परमेश्वर पर भरोसा करें। वह चाहते थे कि वे पूरी तरह से परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर रहें ताकि परमेश्वर जो करना चाहते है, वह पूरा हो सके। परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं। एक मछली के माध्यम से उन्होंने शिष्यों को उनके कर चुकाने के लिए पैसे प्रदान किए। फिर भी यीशु ने कहा कि उन्हें मार डाला जाएगा। मृत्यु परमेश्वर और दूसरों की सेवा करने का हिस्सा थी। शिष्य भ्रमित और दुखी थे। यह उनके लिए एक परीक्षा (परीक्षा) का समय था।

मत्ती 18:1–11

यह यीशु के चौथे लंबे संदेश की शुरुआत थी। इसमें उन्होंने इस बारे में बात की कि महत्वपूर्ण होने का क्या मतलब है। उन्होंने दूसरों को माफ करने की बात भी की। यीशु के समय में, बहुत से लोग नहीं मानते थे कि बच्चे पूर्ण मानव होते हैं। लेकिन यीशु ने दिखाया कि बच्चे बहुत महत्वपूर्ण हैं। बच्चों की कई ज़रूरतें होती हैं और उन्हें दूसरों पर भरोसा करना चाहिए कि वे उनकी देखभाल करेंगे। यीशु ने कहा कि बच्चों को पाप में डालना बहुत बुरी बात है। यह किसी भी विनम्र और भरोसेमंद व्यक्ति के साथ करना बुरा है। यीशु ने यह भी सिखाया कि उनके शिष्यों को परमेश्वर के राज्य में छोटे बच्चों की तरह बनना चाहिए। उन्हें महत्वपूर्ण समझे जाने की कोशिश बंद कर देनी चाहिए। उन्हें विनम्र होना चाहिए और यीशु पर भरोसा करना चाहिए। यह यीशु पर विश्वास करने वाले छोटे बच्चों जैसा होने का अर्थ है। फिर भी शिष्य परमेश्वर के कार्य में अगुवे थे। उन्हें बच्चों या यीशु के किसी भी अनुयायी को पाप में नहीं डालना चाहिए। उन्हें परमेश्वर के बारे में सत्य सिखाने में सावधान रहना चाहिए। यीशु इस बारे में बहुत गंभीर थे। उन्होंने पाप से बचने के लिए शरीर को नुकसान पहुंचाने की बात की। उनका मतलब यह नहीं था कि लोग वास्तव में खुद को नुकसान पहुंचाएं। यीशु इस तरह से बात कर रहे थे जिससे लोग उनकी बात सुन पाए। वह चाहते थे कि लोग समझें कि परमेश्वर के जीवन के मार्ग का पालन करना कितना महत्वपूर्ण है।

मत्ती 18:12–14

मनुष्य उन भेड़ों के समान हैं जो परमेश्वर के परिवार से खो गए हैं। पिता परमेश्वर अपने पुत्र को उन्हें खोजने के लिए संसार में भेजता है। हर एक व्यक्ति के घर वापस आने पर वह बहुत खुश होते हैं। परमेश्वर नहीं चाहते कि कोई भी उनके प्रेम और जीवन से कभी अलग हो।

मत्ती 18:15–35

यीशु ने स्वर्ग के राज्य को परमेश्वर के घराने के रूप में वर्णित किया। यह परमेश्वर के संतानों से भरा हुआ है जो सभी भाई-बहन हैं। यीशु ने परमेश्वर के संतानों को सिखाया कि वे संघर्ष का सामना कैसे करें, एक साथ प्रार्थना करें और एक-दूसरे को क्षमा करें। जिन दो लोगों के बीच संघर्ष होता है, उन्हें ईमानदारी और विनम्रता के साथ मिलकर शांति की खोज करनी चाहिए। यदि वे किसी समझौते पर नहीं पहुँच पाते हैं, तो उन्हें दूसरों से मदद लेनी चाहिए। जो लोग दूसरों को नुकसान पहुँचाना बंद करने से इनकार करते हैं, वे तब तक परमेश्वर के परिवार में नहीं रह सकते जब तक कि वे बदल न जाएँ। यीशु ने अपने अनुयायियों के साथ रहने का वचन दिया जो एक साथ प्रार्थना करते हैं। उन्होंने वचन दिया कि परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे। फिर यीशु ने पतरस के अपने भाई-बहनों को क्षमा करने के प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक कहानी सुनाई। परमेश्वर उस राजा की तरह है जिसने अपने सेवक पर बड़ी दया दिखाई और उसे क्षमा कर दिया। लेकिन जिस सेवक को दया और क्षमा मिली, उसने दूसरे सेवक पर दया नहीं दिखाई। परमेश्वर के बच्चों को ऐसा नहीं होना चाहिए। वे एक-दूसरे को क्षमा करके परमेश्वर की दया के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

मत्ती 19:1–15

फरीसी यीशु को फंसाने के तरीके खोज रहे थे। उन्होंने विवाह विच्छेद के बारे में सवाल पूछा। मूसा की व्यवस्था ने लोगों को विवाह विच्छेद की अनुमति दी थी। इसलिए उन्होंने सोचा कि परमेश्वर विवाह विच्छेद को मंजूरी देते हैं। लेकिन यीशु ने उन्हें सिखाया कि जब परमेश्वर ने पृथ्वी बनाई तो वह क्या चाहते थे। दो लोग विवाह करने पर एक हो जाते हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि वे हमेशा एक बने रहें। वे परमेश्वर के विश्वासयोग्य प्रेम के एक चित्र की तरह हैं। परमेश्वर कुछ लोगों को अविवाहित रहने में मदद करते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि चाहे विवाहित हों या अविवाहित, स्वर्ग राज्य की सेवा करें। फिर यीशु ने कुछ बच्चों का स्वागत किया जिन्हें उनके शिष्य दूर भेजने की कोशिश कर रहे थे। बच्चे फरीसियों की तरह नहीं थे जो यीशु को धोखा देने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने बस यीशु पर भरोसा किया और उनका आशीष प्राप्त किया। उन्होंने स्वर्ग के राज्य को समझाने के लिए उनके बारे में बात की। उनका राज्य उन लोगों के लिए है जो विनम्र हैं और यीशु पर पूरी तरह से भरोसा करते हैं।

मत्ती 19:16–30

अच्छे काम करना या धनवान होना किसी को परमेश्वर के राज्य का हिस्सा नहीं बनाता। यीशु का अनुसरण करने से लोगों को परमेश्वर के अनंत जीवन का हिस्सा बनने की अनुमति मिलती है। जब लोग यीशु का अनुसरण करते हैं, तो वे उन चीजों की परवाह करते हैं जिनकी परमेश्वर परवाह करते हैं। यीशु ने समझाया कि धनवान लोगों के लिए परमेश्वर की परवाह करना कठिन हो सकता है। इसका कारण यह है कि वे अक्सर अपने धन पर भरोसा करते हैं और परमेश्वर पर नहीं। यीशु की शिक्षाओं से शिष्य हैरान थे। उन्हें धीरे-धीरे एहसास हो रहा था कि यीशु के प्रति विश्वासयोग्य रहना जितना उन्होंने सोचा था, उससे कहीं ज़्यादा कठिन है।

इसका मतलब था कि वे उन चीजों को खो देंगे जो उनके लिए महत्वपूर्ण थीं। फिर भी यीशु ने वचन दिया कि उन्हें बहुत कुछ मिलेगा। उनके पास इस्राएल के 12 गोत्र का न्याय करने की बुद्धि और अधिकार भी होगा। यह तब होगा जब परमेश्वर नई सृष्टि में सभी चीजों को नया बनाएंगे।

मत्ती 20:1–16

यीशु के समय में, मजदूर बाजार में खड़े रहते थे। वे अपने औज़ारों के साथ खड़े रहते और दिन भर काम पर रखे जाने का इंतज़ार करते। जब पर्याप्त काम नहीं होता, तब भी मजदूर इंतजार करते और आशा करते रहते। उन्हें उस दिन के भोजन खरीदने के लिए पैसे कमाने की जरूरत होती थी। परमेश्वर की अनुग्रह के बारे में सिखाने के लिए यीशु ने अपने शिष्यों को इस बारे में एक कहानी सुनाई। परमेश्वर उस मालिक की तरह है जिसने प्रत्येक मजदूर को उस दिन की जरूरतों के लिए पर्याप्त भुगतान किया। जिन लोगों को पहले काम पर रखा गया था, वे ईर्ष्यालु और क्रोधित थे। वे इस बात से नाखुश थे कि जो लोग आखिरी में काम पर रखे गए थे, उन्हें भी उतना ही भुगतान मिला जितना उन्हें मिला। लेकिन मालिक सभी मजदूरों के साथ उदार होना चाहता था। यह उस तरह है जैसे परमेश्वर अपने राज्य में आने वाले सभी लोगों का स्वागत करते हैं। वे सभी परमेश्वर के नए परिवार के एक पूर्ण और समान हिस्सा माने जाते हैं। वे सभी उस राजा और शासक पर निर्भर होते हैं जो इतनी उदारता से देते हैं।

मत्ती 20:17–34

यरूशलेम जाते समय, यीशु ने शिष्यों के मन के विचार बदलने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह दूसरों की सेवा करने वाले एक अगुवे थे। उन्होंने फिर से बताया कि वह कष्ट सहेंगे और मरेंगे। और फिर वह मृतकों में से जी उठेंगे। शिष्यों को अभी भी लगता था कि परमेश्वर का राज्य मानव सरकारों जैसा होगा। यीशु ने उन्हें एक अलग प्रकार की शक्ति में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। वह चाहते थे कि वे समझें कि परमेश्वर के राज्य में सच्चा सम्मान और अधिकार का क्या अर्थ है। सच्चा अधिकार और सम्मान दूसरों पर शासन करने की शक्ति पर आधारित नहीं है। वे दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण होने पर आधारित नहीं हैं। परमेश्वर के राज्य में, शक्ति और अधिकार दूसरों की सेवा करने पर आधारित हैं। यीशु ने तब अपने शिष्यों को दिखाया कि दूसरों की सेवा करना क्या होता है। उन्होंने दो अंधे पुरुषों के प्रति गहरी चिंता दिखाई और उन्हें चंगा किया। सच्ची शक्ति और अधिकार केवल सेवक यीशु का अनुसरण करने से ही आते हैं।

मत्ती 21:1–17

मत्ती के सुसमाचार में पहली बार, यीशु ने खुलकर इस्राएल के राजा और मसीहा के रूप में कार्य किया। उन्होंने विजय के साथ यरुशलम में प्रवेश किया। लेकिन इस विजय के बावजूद यीशु विनम्र थे। उन्होंने युद्ध के घोड़े की बजाय गधे पर सवारी की। भीड़ ने अपने कपड़े और खजूर की डालियों से सड़क को ढक दिया। ये यहूदियों द्वारा लोगों का स्वागत करने और विजय का जश्न मनाने के सामान्य तरीके थे। भीड़ ने भजन संहिता 118 का एक महत्वपूर्ण गीत भी गाया। यह गीत सैकड़ों साल पुराना था। यह इस बारे में है कि कैसे परमेश्वर अपने पीड़ित लोगों को बचाने के लिए आते हैं। यीशु के बारे में यह गाना यह दर्शाता था कि यीशु परमेश्वर का अपने लोगों की समस्याओं के लिए उत्तर था। यीशु ने दाऊद के सन्तान कहलाने को स्वीकार किया। यह घोषणा करने का एक तरीका था कि वही राजा हैं। फिर राजकीय अधिकार के साथ यीशु ने मंदिर में प्रवेश किए। मंदिर का उपयोग उस तरह से नहीं हो रहा था जिससे परमेश्वर का सम्मान हो। बहुत से लोग मंदिर का उपयोग धन कमाने के लिए कर रहे थे। वे इसे प्रार्थना के स्थान के रूप में उपयोग नहीं कर रहे थे। यीशु ने उन्हें वहाँ से बाहर निकाल दिया। यीशु ने यह सुनिश्चित किया कि मंदिर फिर से स्तुति और चंगा करने का स्थान बने।

मत्ती 21:18–27

अगली सुबह यीशु यरूशलेम वापस गए। उन्हें भूख लगी थी। जिस अंजीर के पेड़ को उन्होंने देखा उसमें फल नहीं थे। यह पेड़ यीशु के समय में परमेश्वर के लोगों की एक तस्वीर था। परमेश्वर चाहते थे कि वे मजबूत और स्वस्थ पौधों की तरह हों जो अच्छी फ़सल को पैदा करते हों। परन्तु इस्राएल ने भले कामों के फल को नहीं दिया जिसकी परमेश्वर अपेक्षा कर रहे थे। यीशु नहीं चाहते थे कि चीज़ें वैसी ही रहें जैसी इस्राएल में थीं। बार-बार उन्होंने सिखाया कि परमेश्वर के लोगों को पाप से दूर रहना चाहिए। उन्हें परमेश्वर की ओर मुड़ना था और केवल उनकी आज्ञा का पालन करना था। यीशु की शिक्षाओं ने इस्राएल के प्राचीनों की शिक्षाओं को चुनौती दी। इसलिए प्राचीनों ने यीशु को उसके अधिकार पर सवाल उठाकर चुनौती दी। लेकिन यीशु ने सिखाना और कार्य करना जारी रखा।

मत्ती 21:28–46

यीशु ने दो कहानियां सुनाई जो इस्राएल को परमेश्वर के दाख की बारी के रूप में दर्शाती थीं। कई लोग जिन्होंने यीशु को हाँ कहा, वे पहली कहानी में पहले बेटे की तरह थे। इसमें चुंगी लेनेवाले, वेश्याएँ, बाहरी लोग और वे लोग शामिल थे जिनसे दूसरे लोग बैर करते थे। इस्राएल के प्राचीन कहानी में दूसरे बेटे की तरह थे। उन्होंने कहा कि वे परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। अगली कहानी में, परमेश्वर ने अपने दाख की बारी की बहुत प्रेम और ध्यान से देखभाल की। उन्होंने अच्छे अंगूरों को पाने की उम्मीद की। यीशु बता रहे थे कि लोगों को कैसे व्यवहार करना चाहिए जब वे पाप से मुंह मोड़ लिया हो। अच्छी फसल उन लोगों के जीवन में दिखाई

देनी चाहिए जो परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं। लेकिन इस्राएल के प्राचीनों ने परमेश्वर के साथ फसल का कोई हिस्सा साझा नहीं किया। वे कहानी में किसान थे जिन्होंने परमेश्वर के दासों को और उनके पुत्र को मार डाला। इसलिए वे दाख की बारी में नहीं रह सके। धार्मिक अगुवे इस कहानी को सुनकर बहुत क्रोधित हुए। यीशु ने एक बार फिर भजन 118 के वचनों का उपयोग किया। भजन का यह हिस्सा एक महत्वपूर्ण पत्थर के बारे में है। निर्माता इसे अपने निर्माण में उपयोग नहीं करना चाहते थे। फिर भी पत्थर का उपयोग किया गया। यह इमारत का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया। धार्मिक अगुवे उन निर्माताओं की तरह थे। यीशु उस पत्थर की तरह थे। परमेश्वर के कई लोग उन्हें स्वीकार करने से इनकार कर रहे थे। फिर भी यीशु परमेश्वर के राज्य का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाएंगे जिसे परमेश्वर बना रहे थे।

मत्ती 22:1–14

यीशु के समय में लोग अक्सर परमेश्वर के राज्य के बारे में एक महान भोज की तरह बात करते थे। यीशु ने इसके बारे में एक कहानी सुनाई। कहानी इस बारे में थी कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को स्वर्ग के राज्य में आमंत्रित किया था। लेकिन उन्होंने इसका हिस्सा बनने से इनकार कर दिया। उन्होंने परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण करने से इनकार करके इसे स्पष्ट कर दिया। परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी देने के लिए कई भविष्यद्वक्ता भेजे। उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं के साथ बुरा व्यवहार किया। फिर उन्होंने यीशु को राजा के निज पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं किया। इन सब कारणों से, इस्राएल को भयानक न्याय का सामना करना पड़ेगा। सन ई. 70 में न्याय आया जब रोमियों ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया। यीशु ने जो कहानी सुनाई, उसमें अन्य लोगों को परमेश्वर के राज्य में आमंत्रित किया गया। जो लोग परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण करते हैं, वे परमेश्वर के महान भोज में उसके अतिथि होंगे।

मत्ती 22:15–33

फरीसी, हेरोदियों और सदूकी आम तौर पर एक-दूसरे से असहमत रहते थे और सत्ता के लिए आपस में लड़ते थे। लेकिन वे सभी यीशु के खिलाफ एक साथ कार्य कर रहे थे। यीशु इस्राएल के किसी भी अगुवों के समूह का हिस्सा नहीं थे। उन्होंने वही बातें नहीं सिखाईं जो इस्राएल के प्राचीन सैकड़ों वर्षों से सिखा रहे थे। उन्होंने नई और शक्तिशाली वचन बोले जो दर्शाते थे कि परमेश्वर का राज्य कैसा है। फरीसियों और हेरोदियों ने यीशु को एक कठिन प्रश्न पूछकर फंसाने की कोशिश की। उनका प्रश्न था कि मानव सरकार का पालन करना चाहिए या परमेश्वर का। परन्तु यीशु ने उन्हें उसे फँसाने की अनुमति नहीं दी। इसके बजाय उसने उन्हें बुद्धिमानी भरा उत्तर दिया। कैसर के अधिकार के अधीन लोगों को कैसर की आज्ञा का पालन करना चाहिए। लेकिन लोगों को किसी भी सरकार से अधिक परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए। फिर सदूकियों ने यीशु को एक कठिन कहानी के द्वारा फंसाने की कोशिश की। उन्हें विश्वास नहीं था कि लोग मरे हुओं में से जी उठेंगे। यीशु ने उन्हें सुधारा। उसने दर्शाया कि पुनरुत्थान वैसा नहीं होगा जैसा वे सोच रहे थे। मृतकों में से उठाए गए लोगों के शरीर वर्त्तमान के शरीरों जैसे नहीं होंगे। वास्तव में महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर जीवन का सामर्थी परमेश्वर है।

मत्ती 22:34–46

फरीसियों ने यीशु के खिलाफ बहस करने और जीतने की आखिरी कोशिश की। उन्होंने उनसे पूछा कि सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा क्या है। यीशु ने ऐसे उत्तर दिए जिनसे उस समय इस्राएल के अधिकांश यहूदी सहमत होते। पहली महत्वपूर्ण आज्ञा थी कि पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें और केवल उसकी सेवा करें। यीशु ने जो शब्द इस्तेमाल किए वे शेमा से आए थे। दूसरी महत्वपूर्ण आज्ञा थी अपने पड़ोसियों की देखभाल करना। फिर यीशु ने फरीसियों से एक कठिन प्रश्न पूछा। मसीह दाऊद के सन्तान और दाऊद के प्रभु दोनों कैसे हो सकते हैं? यह यीशु के बारे में एक रहस्य था जिसे इस्राएल के प्रधान कभी नहीं समझ पाए। वे यह स्वीकार नहीं कर पाए कि परमेश्वर मानव देह में धरती पर आए थे। वे भ्रमित थे और नहीं जानते थे कि कैसे उत्तर दें। प्राचीनों ने यीशु को शब्दों के जाल में फंसाने की कोशिश बंद कर दी।

मत्ती 23:1–39

यीशु ने इस्राएल के अगुवों के एक समूह के विरुद्ध न्याय के शब्द बोले। व्यवस्था के शिक्षक और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे थे। इसका मतलब यह था कि उनके पास मूसा के समान लोगों को सिखाने का अधिकार था। लेकिन इस्राएल के इन अगुवों का समूह दिखावा करनेवाला था। बाहर से वे साफ और पवित्र दिखते थे। फिर भी अंदर से वे पाप और घृणा से भरे हुए थे। वे शक्तिशाली और महत्वपूर्ण दिखने की परवाह करते थे। वे वास्तव में उन लोगों की मदद करने की परवाह नहीं करते थे जिनका वे नेतृत्व करते थे। सात बार यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि उनके खिलाफ न्याय कितना भयानक होगा। इन धार्मिक अगुवों के समूह ने यीशु को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इससे यीशु बहुत दुखी हुए। वह परमेश्वर के लोगों की देखभाल करना चाहते थे जैसे एक मुर्गी अपने बच्चों की रक्षा करती है। लेकिन धार्मिक अगुवों ने नहीं चाहा कि यीशु लोगों के साथ परमेश्वर का कोमल प्रेम साझा करें।

मत्ती 24:1–14

यीशु के शिष्य मंदिर के भवनों की महानता से चकित थे। यीशु ने एक भविष्यवाणी के साथ उत्तर दिया जिसने उन्हें चौंका दिया। मंदिर नष्ट हो जाएगा। यह यीशु के पांचवे लम्बे संदेश का आरम्भ था। उन्होंने इसे तब बोला जब वह और शिष्य

जैतून पहाड़ पर थे। यीशु ने शिष्यों के प्रश्नों का उत्तर यशायाह 19:2 के वचनों का उपयोग करके दिया। उन्होंने कहा कि इन घटनाओं की शुरुआत प्रसव पीड़ा जैसी होगी। यीशु ने जिन परेशानियों का वर्णन किया, उनका संबंध परमेश्वर की दुनिया को फिर से नया बनाने की योजना से था। नए बच्चे के आने से पहले, माँ के लिए दर्द और पीड़ा होती है। परमेश्वर के राज्य के आने से पहले ऐसा ही होगा। यीशु ने जिन कष्टों का वर्णन किया, उनमें से अधिकांश उनके मृतकों में से जी उठने के तुरंत बाद हुआ। यह उनके अनुयायियों के साथ ईसवी सन्. 30 से 70 के वर्षों में हुआ। जब उन्होंने यीशु के राज्य का सुसमाचार का प्रचार किया तो उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया। प्रेरितों के काम की पुस्तक इस बारे में बात करती है।

मत्ती 24:15–51

यीशु ने कहा कि इस्राएल में समस्याएँ तब होंगी जब उनके शिष्य जीवित होंगे। उनके शब्द ईसवी सन् 66 से ईसवी सन्. 70 के वर्षों में सच हो गए। रोमियों ने मंदिर का उपयोग ऐसे रूप से किया जो पवित्र नहीं थे और फिर मंदिर को नष्ट कर दिया। यीशु ने खुद को मनुष्य का पुत्र बताया। उन्होंने भविष्यवक्ता दानिय्येल के उस दर्शन को पूरा किया जो उस शासक के बारे में था जिसका राज्य कभी नष्ट नहीं होगा (दानिय्येल 7:13–14)। केवल परमेश्वर ही यह सही-सही जानते हैं कि यीशु कब पृथ्वी पर वापस आएंगे। केवल परमेश्वर ही जानते हैं कि कब सभी देखेंगे कि यीशु सच्चे राजा हैं। यीशु नहीं चाहते थे कि उनके अनुयायी इससे आश्चर्यचकित हों या इसके खो जाने के बारे में चिंतित हों। उनके विश्वासयोग्य अनुयायी हर दिन इस आशा के साथ जी सकते हैं कि यीशु की वापसी होगी।

मत्ती 25:1–13

यीशु ने एक विवाह भोज की कहानी सुनाई। यहूदियों के लिए यह सामान्य था कि वे परमेश्वर के राज्य के आगमन को एक भव्य भोज के रूप में वर्णित करें। दृष्टांत में विवाह भोज राजा यीशु के सम्मान में एक दावत थी। कहानी में, पाँच कुवरियाँ तैयार थीं जब दूल्हा आया, जबकि पाँच तैयार नहीं थीं। मसीह अपने लोगों से उस महत्वपूर्ण क्षण के लिए तैयार रहने का आग्रह कर रहे थे।

मत्ती 25:14–30

परमेश्वर हर किसी को अपनी सेवा और दूसरों की सेवा के लिए उपहार देते हैं। उन्होंने अपने इस्राएली लोगों को, अपनी वाचा और मसीह के विशेष उपहार दिए थे। फिर भी, कई लोगों ने वाचाओं के प्रति निष्ठा नहीं दिखाई और उन्होंने यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार नहीं किया। यीशु ने एक कहानी सुनाई ताकि वो दर्शा सकें कि यह इस्राएल के लिए कितना खतरनाक था। दृष्टांत में, दो दासों ने अपने तोड़ों का समझदारी से उपयोग किया और उन्हें पुरस्कृत किया गया। तीसरे दास ने अपने तोड़े का कोई उपयोग नहीं किया। यह दास उन लोगों के समान है जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास नहीं करते। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा नहीं बनना चुन रहे हैं।

मत्ती 25:31–46

यीशु के लंबे संदेश का अंतिम भाग परमेश्वर के परिवार के बारे में था। यह यीशु द्वारा न्याय करने के बारे में भी था। केवल यीशु ही इतने बुद्धिमान हैं कि वे पूरी दुनिया के न्यायाधीश बन सकते हैं। एक दिन वह हर बुराई को हर अच्छाई से अलग कर देंगे। वह सभी लोगों का न्याय करेंगे कि उन्होंने उसके भाइयों और बहनों के साथ कैसा व्यवहार किया। जो लोग यीशु का अनुसरण करते हैं वे उनके भाई और बहन हैं। वे यीशु के साथ बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं। वे इतने करीब हैं कि जो उनके साथ होता है वह यीशु के साथ भी होता है। यह एक अद्‌भुत रहस्य है। यीशु चाहते हैं कि सभी लोग दूसरों की सेवा करने के उनके उदाहरण का अनुसरण करें। जैसे वे दूसरों की देखभाल करते हैं, वे यीशु की सेवा कर रहे हैं।

मत्ती 26:1–16

यीशु जानते थे कि उनके शिष्यों में से एक उनके विरुद्ध हो जाएगा। उन्हें पता था कि इस्राएल के अगुवे उनके खिलाफ हिंसा का प्रयोग करेंगे। जब स्त्री ने यीशु के सिर पर इत्र डाला तो शिष्यों ने सोचा कि यह व्यर्थ है। इससे शिष्य नाराज हो गए। लेकिन यीशु जानते थे कि यह व्यर्थ नहीं था। वह स्त्री यीशु को दफनाने की तैयारी में मदद कर रही थी। यह बहुत बुरी खबर जैसे लग रही थी। लेकिन यीशु जानते थे कि यह सुसमाचार की ओर ले जाएगा जो पृथ्वी पर हर जगह फैल जाएगी।

मत्ती 26:17–30

फसह पर्व पुराने नियम में परमेश्वर की इस्राएल के साथ की गई वाचा की एक शक्तिशाली याद दिलाने वाला था। परमेश्वर यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से एक नई वाचा स्थापित करने वाले थे। यह नई वाचा उन सभी लोगों के लिए है जो यीशु में विश्वास करते हैं। यीशु अपने शिष्यों को अपनी मृत्यु का उद्देश्य बता रहे थे। उनकी मृत्यु लोगों को पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति से मुक्त करेगी। यीशु ने इस नई स्वतंत्रता के बारे में सिखाने के लिए रोटी और दाखरस का उपयोग किया। वह अपने शरीर को वैसे ही त्याग देंगे जैसे उन्होंने भोज के समय में शिष्यों को रोटी परोसी थी। जैसे उन्होंने दाखरस उंडेली, वैसे ही लहू उनके शरीर से बहेगा जब उन्हें मार दिया जाएगा। इस प्रकार वह उस कार्य को पूरा करेंगे जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें भेजा था।

मत्ती 26:31–46

यीशु बहुत गहरे दुःख और चिंता में थे। वह परमेश्वर के लोगों को मुक्त करने के लिए अपने कार्य का सबसे कठिन भाग करने जा रहे थे। उन्हें अपने शिष्यों के बिना बुराई के खिलाफ अपनी सबसे कठिन लड़ाई का सामना करना पड़ेगा। वे सभी भाग जाएंगे। इस दर्दनाक सच्चाई के साथ उन्होंने प्रार्थना में अपने पिता की ओर रुख किया। उन्होंने उम्मीद की थी कि उनके शिष्य उनके साथ प्रार्थना करेंगे, लेकिन वे सो गए। जब तक वह संसार में कार्य करते रहे, उनके पिता ने उन्हें कार्य करने की शक्ति दी थी। यीशु ने प्रार्थना की थी कि जो परमेश्वर चाहते हैं वह पृथ्वी पर हो।

मत्ती 26:47–56

यीशु का शिष्य यहूदा इस्करियोती उनके खिलाफ हो गया। यहूदा ने यीशु को उन लोगों के हवाले कर दिया जो उन्हें नुकसान पहुंचाना चाहते थे। यीशु के एक शिष्य ने तलवार से उनकी रक्षा करने की कोशिश की। परन्तु यीशु ने घायल व्यक्ति को चंगा कर दिया। यीशु शांत रहे और मनुष्यों के खिलाफ हिंसा का उपयोग करने से इनकार कर दिया। उन्होंने समझाया कि जो हो रहा था उसे वो रोक सकते थे। लेकिन इसके बजाय उन्होंने खुद को गिरफ्तार होने दिया। यीशु परमेश्वर की आज्ञा मानने और परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य को करने के लिए प्रतिबद्ध थे। उनका कार्य मनुष्यों से लड़ना नहीं था बल्कि उन्हें बुराई से बचाना था।

Matthew 26:57–68

रोमी सरकार ने लोगों को मृत्यु की सजा देने के लिए यहूदी धार्मिक प्रधानों को अनुमति नहीं दी थी। इसलिए, यहूदी अगुवों ने यीशु को मृत्युदंड देने के लिए रोमियों को प्रेरित किया। वे चाहते थे कि यीशु को मसीह होने का दावा करने के लिए दोषी ठहराया जाए। ऐसा माना जाता था कि मसीहा एक विद्रोही योद्धा होगा जो सरकार के विरुद्ध लड़ेगा। यह आरोप यीशु को मृत्यु की सजा देने के लिए रोमी लोगों को मजबूर कर देगा। यीशु ने प्राचीनों से बहस नहीं की या यह नहीं कहा कि वह मसीहा नहीं हैं। इसके बजाय, यीशु ने मनुष्य के पुत्र की तरह फिर से अपने बारे में बात की। महासभा ने दावा किया कि वह बुरी बातें कह रहे थे जो लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाती थीं। मूसा की व्यवस्था (व्यवस्थाविवरण 13:1–5) के अनुसार यह मृत्यु के योग्य अपराध था।

मत्ती 26:69–75

पतरस ने निडरता से वादा किया था कि वह हमेशा यीशु के प्रति निष्ठावान रहेंगे (मत्ती 26:35)। लेकिन जब उसने खुद को खतरे में पाया, तो उन्होंने अपना वादा तोड़ दिया। तीन बार उन्होंने कहा कि वह यीशु को नहीं जानते थे। जब पतरस को एहसास हुआ कि उन्होंने क्या किया है, तो वह गहरे दुःख से भर गए। यीशु पतरस को जानते थे और वह पतरस की कमजोरियों को भी जानते थे। परन्तु यीशु फिर भी पतरस से प्यार करते थे। बाद में उन्होंने पतरस को शिष्यों के समुदाय में फिर से स्वागत किया।

मत्ती 27:1–10

पतरस ने यीशु को जानने के बारे में झूठ बोला, और यहूदा ने यीशु को उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया। बाद में यीशु ने पतरस को माफ कर दिया और उसे फिर से शिष्य बनने में मदद की। यह यहूदा के साथ जो हुआ उससे अलग था। यहूदा ने यीशु के खिलाफ जाने के लिए पैसे प्राप्त किए थे। बहुत पहले भविष्यवक्ता जकर्याह और यिर्मयाह ने उन चांदी के सिक्कों के बारे में बात की थी। यीशु को सौंपने के बाद, यहूदा अब धन नहीं चाहता था। उसे एहसास हुआ कि उसने किसी ऐसे व्यक्ति को मृत्यु की सज़ा देने में मदद की है जो दोषी नहीं था। उसे बहुत दुख हुआ और उसने जो किया उसके लिए उसे खेद हुआ। लेकिन उसने खुद को माफ़ नहीं होने दिया या समुदाय में वापस नहीं गया। इसके बजाय, यहूदा ने खुद को फाँसी लगा ली।

मत्ती 27:11–26

पिलातुस यहूदिया का रोमी राज्यपाल था। यीशु के मुकदमे के दौरान, पिलातुस जानना चाहता था कि क्या यीशु राजा है। क्या यीशु यहूदी लोगों को रोमी सरकार पर हमला करने के लिए नेतृत्व करेंगे? पिलातुस ने जल्दी ही समझ लिया कि यीशु खतरनाक या हिंसक नहीं थे। परन्तु पिलातुस को भीड़ पर नियंत्रण बनाए रखना था और फसह के दौरान लड़ाई से बचना था। इसलिए पिलातुस ने वही किया जो वह जानता था कि ग़लत था। उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने की सजा सुनाई। पिलातुस ने यह तब भी किया जब यीशु किसी भी चीज़ के दोषी नहीं थे। पिलातुस ने अपने हाथ धोए यह चिन्ह देने के लिए कि वह यीशु की मृत्यु के लिए दोषी नहीं था। फिर भी पानी उसका दोष नहीं धो सका। यहूदी प्राचीन दोषी थे। चिल्लाती भीड़ भी दोषी थी। यीशु दूसरों के द्वारा किए गए गलत कामों के कारण मरेंगे।

मत्ती 27:27–44

यीशु के मृत्यु के समय बहुत से लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया। रोमी सैनिकों ने यीशु के राजा होने को लेकर घटिया मज़ाक किए। राह चलते लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे कि वह स्वयं को मृत्यु से नहीं बचा सकता। इस्राएल के अगुवे और यीशु के साथ लटके अपराधियों ने भी उसका उपहास किया। उन्होंने सोचा कि एक सच्चा मसीहा लोगों को और खुद को बचाएंगे। उन्होंने सोचा कि एक असली राजा क्रूस पर नहीं मारे जाएंगे। फिर भी कांटों का ताज और यीशु के सिर के ऊपर का दोषपत्र सत्य को ही दर्शाते थे। वे इस्राएल के राजा थे। और

उनकी मृत्यु के द्वारा ही वे परमेश्वर के लोगों को उद्धार दिलाएंगे।

मत्ती 27:45–66

जब यीशु की मृत्यु हुई, तो उन्होंने पाप और मृत्यु का नियंत्रण तोड़ दिया जो परमेश्वर की दुनिया पर था। इसका संकेत यह था कि पृथ्वी हिल गई, फट गई और खुल गई। कब्रें खुल गईं और कुछ लोग मृतकों में से जी उठे। यह कुछ पूरी तरह से कुछ नया शुरू होने का संकेत था। लेकिन यीशु के शरीर में अब कोई जीवन नहीं था। उसका शरीर क्रूस से नीचे उतारा गया। अरिमतियाह के यूसुफ यहूदी परिषद में एक धनी प्रधान थे। उन्होंने यीशु के शरीर का ध्यान रखा और उसे अपनी ही कब्र में रखा। कब्र को पहरेदारों और एक बड़े पत्थर से सुरक्षित किया गया था।

मत्ती 28:1–15

मरियम मगदलीनी और मरियम नाम की एक अन्य स्त्री यीशु को आदर देने के लिए कब्र पर गईं। एक स्वर्गदूत ने उन्हें बताया कि यीशु वहां नहीं थे क्योंकि वह मृतकों में से जी उठे थे। वे स्त्रीयां यीशु के पुनरुत्थान की पहली गवाह बनीं। यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी! वह नए जीवन के लिए उठाए गए थे। पाप और मृत्यु परमेश्वर के शत्रु थे। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के माध्यम से उन पर विजय प्राप्त की। वह स्त्रीयां डर गईं लेकिन साथ ही खुशी से भर गईं। जब उन्होंने यीशु से मुलाकात की, तो उन्होंने तुरंत उनकी आराधना की। धार्मिक अगुवों ने जो हुआ उसके बारे में पहरेदारों को झूठ बोलने के लिए धन दिए। यीशु ने कई बार कहा था कि वह मृतकों में से जी उठेंगे। अगुवे नहीं चाहते थे कि कोई यह विश्वास करे कि यीशु सच कह रहे थे।

मत्ती 28:16–20

शिष्यों ने यीशु को देखा और गलील के एक पहाड़ पर उसकी आराधना की। उनके अंतिम वचन उनके अधिकार और शिष्यों को उनके कार्य को जारी रखने के बारे में थे। यीशु का पूरे विश्व पर अधिकार है। उन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर का शासन लाया। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वे पृथ्वी पर किए गए उनके कार्य को करते रहें। उन्हें हर जगह लोगों को परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करना चाहिए। यीशु मसीह की विजय सब जातियों में घोषित की जानी चाहिए। यीशु सभी लोगों के लिए राजा हैं, जिनकी आराधना और आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए। यीशु को उनके जन्म के समय इम्मानूएल कहा गया था (मत्ती 1:23)। उस नाम का अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ। यीशु ने अपने शिष्यों से वादा किया कि वह हमेशा उनके साथ रहेंगे।